आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date: 03-10-14

आत्मा और परमात्मा का ऐक्युरेंट ज्ञान और योग सिखलाकर, हम आत्मा को विकारों से मुक्त होने का रास्ता बताने वाले, शिवबाबा ने कहा, "मीठे बच्चे – आत्मा से विकारों का किचड़ा निकाल शुद्ध फूल बनो. बाप की याद से ही सारा किचड़ा निकलेगा.

बाबा ने आज सारी मुरली में हमें आत्मा, परमात्मा और योग का ज्ञान दिया हैं. यह तो हम जानते है की यह ईश्वरीय ज्ञान है समझकर धारण करने के लिए हैं. अगर हम ज्ञान को बहुत अच्छा समझते है पर धारणा कुछ नहीं तो फिर हम कलियुग के पंडित बन जाते हैं. इस ज्ञान को अपने में सहज रुप से धारण कर सके इसलिए बाबा ने जो भी पॉइन्टस आत्मा-परमात्मा के बारे में और योग के बारे में बताये है उसे अलग से लिखकर स्वयं की आत्मिक स्थिति बनाने की और आत्मिक स्थिति में रहकर बाबा से योग करने की प्रैक्टिस कर सकते हैं.

आत्मिक स्थिति में रहकर नीचे बताये हुए महावाक्यों को पढ़े. इसे हमारी आत्म-अभिमानी स्थिति बनाने में मदद मिलेगी.

- बाबा कहते है, तुम्हारी यह जो छोटी सी आत्मा है उन पर कितना मैल चड़ा हुआ हैं. मैल चड़ने से कितना घाटा पड़ जाता है. यह फायदा और घाटा तब देखने में आता है जब की शरीर के साथ हैं. तुम जानते हो हम आत्मा जब पवित्र बनेंगी तब यह लक्ष्मी-नारायण जैसा पवित्र शरीर मिलेगा.

- बाबा कहते है, तुम्हारी आत्मा ही कंचन थी, बिल्कुल पवित्र थी. तो शरीर भी कितना सुन्दर था. इन लक्ष्मी-नारायण का शरीर देखो कितना सुन्दर हैं.

- बाबा कहते है, मनुष्य तो शरीर को ही पूंजते हैं ना. आत्मा की तरफ नहीं देखते. आत्मा की तो पहचान ही नहीं हैं. पहले तुम्हारी आत्मा भी सुन्दर थी तो चोला भी सुन्दर था. तुम भी अभी यह लक्ष्मी-नारायण जैसा बनना चाहते हो तो आत्मा कितनी शुद्ध होनी चाहिए.

- बाबा कहते है, आत्मा को ही तमोप्रधान कहा जाता है क्योंकि उनमें फुल किचड़ा है. तुम अच्छी रीति बैठ विचार करेंगे तो फील होगा बहुत किचड़ा भरा हुआ है. आत्मा में ही रावण की प्रवेशता है. अभी बाप की याद में रहने से ही किचड़ा निकलता हैं.

- बाबा कहते है, तुमको तो सब खामियां निकाल बिल्कुल पवित्र बनना है ना. यह लक्ष्मी-नारायण कितने पवित्र हैं.

- बाबा कहते है, आत्मा कितनी छोटी बिन्दी हैं. फिर जब आत्मा शरीर में प्रवेश करती है तो शरीर बड़ा होता हैं. आत्मा तो छोटी-बड़ी नहीं होती हैं.

आत्मिक स्थिति में रहकर बाप को याद करें और नीचे बताये हुए महावाक्यों को पढ़े.

- शिवबाबा तो बहुत पवित्र हैं. हम आत्माये क्या से क्या बन जाती हैं. अब बाप समझाते ही है तुमने मुझे बुलाया ही है आत्मा को शुद्ध बनाने के लिए.

- शिवबाबा तो बागवान भी हैं. हम आत्माये कितनी मैली एकदम कांटा बन गई थी. अब बाप की याद से हमारी आत्मा एकदम फस्टक्लास फुल, पवित्र बनती जाती हैं.

- शिवबाबा की याद से जैसे-जैसे हमारी आत्मा पवित्र बनती जाती है फिर तो कोई की शक्ल देखने का भी दिल नहीं होता हैं. अब हमें अपवित्र को देखना ही नहीं हैं.

- शिवबाबा है ही एवरप्योर. हम आत्माये बाबा के पास आये है पवित्र बनने के लिए.

- शिवबाबा ही हमें ऐसा लक्ष्मी-नारायण जैसा बनाते है तो हमें भी एक बाप की याद में रहकर ही शरीर छोड़ना हैं.

ॐ शांति.